(6) यह व्यक्ति के चारित्रिक व्यवहार को प्रभावित करता है।

* बालक के नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :

→ (i) परिवार (Family)
→ (ii) विद्यालय (School)
→ (iii) बौद्धिक विकास (Development of Intelligence)
→ (iv) साथी - समूह (Peer Group)
→ (v) यौन व्यवहार (Sex Behaviour)
→ (vi) मनोरंजन संबंधी कारक (Recreation Factors)
→ (vii) धर्म (Religion)
→ (viii) आयु इत्यादि।
→ (ix) मास मिडिया।

* बालक के नैतिक विकास में मूल्यों का महत्व :

(i) इससे व्यक्ति वांछित मूल्यों को ग्रहण करता है।
(ii) इसमें व्यक्ति वांछित व्यवहार करना तथा अवांछित व्यवहार त्यागना सीख जाता है।
(iii) नैतिक विकास बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाता है।
(iv) इसमें कुछ मूल्य सार्वभौमिक होते है जैसे - ईमानदारी विनम्रता, दयालुता, सहयोग आदि।
(v) इसमें बच्चे सामाजिक परिस्थियों के अनुरूप व्यवहार करना सीखते है

* कोह्लबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत
(Kohlberg's Theory of Moral Development)

ऐतिहासिक रूप से देखा जाये तो नैतिक विकास सिद्धांत का प्रतिपादन तीन प्रमुख प्राचीन दार्शनिकों ने किया था, जिसमें सर्वप्रथम संत ऑगस्टाइन (354ई०-430ई०) है जो एक धर्म विज्ञानी थे, दूसरे दार्शनिक जॉन लॉक (1632ई०-1704ई०) तथा तिसरे जीन जेक्स रूसो (1712ई०-1778ई०) थे।

इन तीनो दार्शनिको ने नैतिकता के संबंध में अपने अलग विचारो को दिया। परन्तु आधुनिक विचारधारा के मनोवैज्ञानिक लॉरेंस कोह्लबर्ग ने इन सभी सिद्धांतों का गहनता से अध्ययन कर व्यवस्थित एवं विस्तृत रूप में अपने सिद्धांत की व्याख्या की जिसे कोह्लबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के नाम से जाना जाता है।
लॉरेंस कोह्लबर्ग एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने पियाजे के द्वारा प्रस्तुत नैतिक विकास से संबंधित विचारों को विस्तृत करके तार्किक चिंतन के तीन स्तरों के रूप में प्रस्तुत किया।

चूँकि कोह्लबर्ग ने 10 वर्ष से 16 वर्ष की आयु के बालको के सम्मुख कहानियों के रूप में नैतिक दुविधाओं (Moral Dilemmas) को प्रस्तुत किया तथा इन दुविधाओं पर आधारित साक्षात्कार लेकर बच्चों के नैतिकता के स्तर को मापा।

कोह्लबर्ग ने अपने नैतिक विकास सिद्धांत को देने के क्रम में कई कहानियों के माध्यम से नैतिक उलझनों को दूर करने का प्रयास किया जिसमें प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कहानी इसप्रकार से है ——

यूरोप में एक कैंसर पिड़ित महिला मौत से जुझ रही थी। डॉ० ने कहा कि एक ऐसी दवा है जिससे शायद महिला की जान बच सकती है लेकिन जिसने भी उस दवा का खोज किया है वह अधिक पैसे कमाकर लाभ पाना चाहता है। दवाई बनाने में जितना खर्च आया है, उसका वह 10 गुना मांग रहा है उस बीमार औरत का पति हाइनेज बहुत ही गरीब था वह सब दोस्तों, रिश्तेदारों या अन्य लोगों से काफी विनती किया पैसे उधार मांगने के परन्तु सबके तरफ से उसे निराशा ही मिली। अंत में उसे कुछ ही पैसे उधार मिले जो दवाई के दाम के भी आधे थे, उसने दवाई वाले से कहा कि मेरी पत्नी मरने वाली है, वो उस दवा को कम कीमत में ही दे दे। उसे बाकी पैसे बाद में दे देगा, फिर भी उसने दवा नहीं दिया और बोला की मैंने यह दवा (रेडियम) की खोज की है और इसे बेचकर काफी लाभ कमाऊँगा।

अंत में हाइनेज ने उस दुकान का ताला तोड़कर उस दवा को चुरा लिया। इसप्रकार कोह्लबर्ग ने इस कहानी के माध्यम से बच्चों से साक्षात्कार लिया और उन्हें नैतिकता से संबंधित कुछ प्रश्नों का उत्तर देने को कहा ——

(i) क्या हाइनेज को ऐसा करना चाहिए था?
(ii) क्या उनका व्यवहार नैतिक रूप से गलत था या सही?
(iii) उसने ऐसा क्यों किया?
(iv) क्या यह एक पति का कर्तव्य है कि वो अपनी पत्नी की जान बचाने के लिए दवा की चोरी करें?
(v) क्या दवाई बनाने वाले को यह हक है कि वह ज्यादा पैसे मांगे।

इसप्रकार इस कहानी तथा साक्षात्कार से प्राप्त अनुक्रियाओं (Response) का विश्लेषण करके कोहलबर्ग ने यह बतलाया की व्यक्ति में नैतिक विकास तीन मुख्य अवस्थाओं या स्तरों से होकर गुजरता है जिसमें प्रत्येक स्तर की दो-दो उपअवस्थाएँ होती हैं।

<u>नैतिक तर्कणा</u> :- सही-गलत उम्र के साथ-साथ बदलता रहता है।

* कोहलबर्ग ने अपने नैतिक विकास सिद्धांत को तीन-चरणों तथा कुल छः सोपानों (उपअवस्थाओं) में विभाजित किया है-

→ (1) पूर्व-परम्परागत स्तर या प्राक् रूढ़िगत नैतिकता का स्तर (Pre-conventional Morality Level)

- Stage I. (i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था (Age 2 वर्ष - 4 वर्ष)
- Stage II अहंकार की अवस्था (Age 4 - 7 वर्ष)

→ (2) परम्परागत नैतिकता या रूढ़िगत नैतिकता का स्तर (Conventional Morality Level)

- Stage III (i) प्रशंसा की अवस्था (Age 7-8 वर्ष)
- Stage IV (ii) सामाजिक अनुरूपता (सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान) (Age 8-10 वर्ष)

→ (3) उत्तर परम्परागत स्तर या आत्मस्वीकृत-नैतिकता का स्तर या उत्तर रूढ़िगत नैतिकता (post conventional morality Level)

- Stage V (i) सामाजिक सहमति की अवस्था (Age 10-13 years)
- Stage VI (ii) विवेक की अवस्था (Age 13 वर्ष - प्रौढ़ावस्था)

(1) पूर्व परम्परागत नैतिकता या प्राक् रूढ़िगत नैतिकता का स्तर :- यह अवस्था 4 वर्ष से लेकर 10 वर्ष की आयु तक होती है। इसमें बालक उचित - अनुचित का ज्ञान तथा उसके व्यवहारों से दूसरे के द्वारा मिलने वाली प्रतिक्रिया के आधार पर अपने नैतिकता को प्रदर्शित करता है।

इस अवस्था में बालक या तो डरकर या किसी लालचवश किसी कार्यों या बातों को करते हैं या मानते हैं।

कोहलबर्ग ने अपने सिद्धांत के अनुसार इसे दो सोपानों या उपअवस्थाओं में विभाजित किया गया है :-

- (i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था (2 वर्ष - 4 वर्ष तक)
- (ii) अहंकार की अवस्था (4 वर्ष - 7 वर्ष तक)

(i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था :- इस अवस्था में माता-पिता या बड़ो से बालक के अंदर डर या भय बना रहता है, वे अच्छे कार्यों के लिए प्रशंसा तथा पुरस्कार पाने की इच्छा रखते हैं। अतः बच्चों के अनुसार इस stage में हाइनेस ने दवा चुराई तो गलत किया।

(ii) अहंकार ~~एवं~~ ~~[illegible]~~ की अवस्था :- इसमें बालक अपनी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं या अपने अंदर उत्पन्न अहंकार के आधार पर नैतिक चिंतन करता है। अतः इसमें बच्चा सही - गलत समझने लगता है।

(2) परम्परागत नैतिकता या रूढ़िगत नैतिकता का स्तर :- यह अवस्था 10 वर्ष 13 वर्षों तक की होती है, इस अवस्था के बालकों में जो नैतिक विकास देखने को मिलता है उसका रूप परम्परागत ही होता है। जैसे किसी भी कार्य को करने

पर वे अपने को अच्छा लड़का या अच्छी लड़की से संबोधित करना पसंद करते है। साथ ही अपनी इच्छाओं को ही सर्वोपरी मानते है। अतः उसमें चिंतन, संज्ञान एवं योग्यताओ का विकास हो चुका होता है, वे सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों के अनुरूप व्यवहारिक होते जाते है।

कोहलबर्ग ने इसे भी दो सोपानों या उपअवस्थाओं में विभाजित किया है —

- (i) प्रशंसा की अवस्था।
- (ii) सामाजिक अनुरूपता।

(i) <u>प्रशंसा की अवस्था :</u> इस अवस्था में बालक उन सभी कार्यों को नैतिक या अच्छा समझने लगता है जिससे उसे सामाजिक प्रशंसा या अनुमोदन मिले। इसप्रकार इस अवस्था में बच्चे के चिंतन का स्वरूप समाज और उसके परिवेश से निर्धारित होता है।

(ii) <u>सामाजिक अनुरूपता :</u> इसमें बच्चा सामाजिक नियमों के अनुरूप आचरण या व्यवहार करना ही नैतिकता समझता है तथा इसके विरुद्ध किये गये व्यवहार एवं कार्यों को अनैतिक या गलत समझता है।

(3) <u>उत्तर-परम्परागत या उत्तर-रूढ़िगत नैतिकता का स्तर :</u> यह अवस्था 13 वर्ष से प्रारंभ होकर प्रौढ़ावस्था तक चलती है। इसमें बालक किशोर के रूप में नैतिक विकास के उच्चतम स्तर को छूने लगता है, साथ ही किशोर उन व्यक्तिक अधिकारो

तथा नियमों का आदर करते है जो प्रजातांत्रिक रूप से मान्य होता है, उन्हें इस बात का विश्वास हो जाता है कि समाज का उत्तम कल्याण तब होता है जब समाज के लोग सामाजिक नियमों का आदरपूर्वक पालन करते है।

इस प्रकार इस अवस्था में किशोर दूसरे के विचारो तथा नैतिक प्रतिबंधों से स्वतंत्र होकर अपने आंतरिक मानको (standard), आत्म-सम्मान के अनुरूप व्यवहार करने लगता है। जैसे - व्यक्ति यह मानने लगता है कि समूह, समुदाय, समाज तथा सामाजिक संस्थाये व्यक्ति के भलाई के लिए ही स्थापित होते है।

इसे भी कोहलबर्ग ने दो उपअवस्थाओं में विभाजित किया है ——

- (i) सामाजिक सहमति या समझौते की अवस्था।
- (ii) विवेक की अवस्था।

(i) <u>सामाजिक सहमति या समझौते की अवस्था</u> :-

इसमें व्यक्ति समाज, समुदाय को रक्षा उपकरण के रूप में देखता है। चूँकि समाज में रहकर ही व्यक्ति के हितों की रक्षा हो सकती है।

(ii) <u>विवेक की अवस्था</u> :- इसमें व्यक्ति अच्छा - बुरा नैतिक - अनैतिक, वांछनीय - अवांछनीय व्यवहारों के संबंध में अपने विवेक के आधार पर निर्णय लेता है।

कोहलबर्ग के द्वारा प्रस्तुत नैतिक विकास के विभिन्न सोपानो पर नैतिक निर्णय प्रक्रिया का उदाहरण :-

नैतिक प्रश्न :- जैसे माना कि आपकी माँ सख्त बीमार है, रात्रि 11 बजे डॉक्टर ने उन्हें देने के लिए कोई दवा बताई है। आप बाजार में दवा खरीदने जाते है परन्तु सभी दुकाने बंद है। डॉक्टर का कहना है कि दवा तुरंत चाहिए वरना आपकी माँ मर जायेगी। ऐसी स्थिति में क्या आप अपने किसी मित्र जो शहर में कहीं दूर रहता है, उसके दुकान का ताला तोड़कर दवा लाना चाहेंगे?

• प्रथम स्तर पर बालक के नैतिकता का स्तर :-

I पक्ष :- (नहीं) किसी भी परिस्थिति में दूसरे की दुकान का ताला नहीं तोड़ना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने पर पुलिस उसे दण्ड देगी।

II विपक्ष :- (हाँ) दुकान का ताला तोड़कर दवा ले आना चाहिए क्योंकि माँ का जीवन मूल्य है।

* **परम्परागत स्तर पर बालक के नैतिकता के स्तर का मापन :-**

I पक्ष :- (नहीं) किसी भी परिस्थिति में दूसरों की दुकान का ताला नहीं तोड़ना चाहिए, ऐसा केवल गलत व्यक्ति ही करते है।

II विपक्ष :- (नहीं) किसी भी परिस्थिति में दूसरे की दुकान का ताला नहीं तोड़ना चाहिए। ऐसा करना सामाजिक प्रणाली के विरुद्ध होगा। हमें व्यक्तिगत हानि नहीं सहन करनी चाहिए।

* उत्तर परम्परागत स्तर पर बालक के नैतिकता के स्तर का मापन :

(i) **पक्ष में तर्क (हाँ) :** सामाजिक नियम एक-दूसरे के लाभ के लिए बने है इसलिए परिस्थिति को तत्कालिन आवश्यकता को देखते हुए दुकान का ताला तोड़कर दवा ले आनी चाहिए।

(ii) **विपक्ष में तर्क (हाँ) :** किसी भी मानव जीवन को बचाना मुल्य है इसलिए ऐसी संकटकालिन स्थिति में मित्र की दुकान का ताला तोड़कर ले आनी चाहिए।

इसप्रकार अपने प्रयोगों के माध्यम से कोहलबर्ग ने यह पाया कि जैसे-जैसे बच्चा तथा किशोर परिपक्व होते जाते है अर्थात उनकी आयु बढ़ती जाती है वे नैतिकता के विभिन्न स्तर पर बढ़ते चले जाते है तथा किसी भी चरण या सोपान को छोड़कर आगे नहीं बढ़ते है।

अतः कोहलबर्ग ने अपनी समग्र नैतिक अध्ययनों का विश्लेषण कर तीन निष्कर्ष निकाले—

(i) बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक नैतिक तर्कणा प्राक्-रुढ़िगत या पूर्व-परम्परागत से रुढ़िगत या परम्परागत स्तर में परिवर्तित होती है।

(ii) किशोरावस्था तथा व्यस्कावस्था में भी उत्तररुढ़िगत तर्कणा तुलनात्मक रुप से असमान्य होती है।

(iii) किसी व्यक्ति का नैतिक निर्णय किसी एक स्तर के भितर की उसी अवस्था का प्रतिबिंबन हमेशा नहीं करता है। अर्थात सभी स्तरों में अपना अलग-अलग विचार प्रस्तुत करता है।

* कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत का शैक्षिक महत्व :-

(1) बालकों का मनोविश्लेषण करके अध्यापक इस बात का पता लगा सकते है कि उनकी अभिरुचियाँ, क्षमताएँ या योग्यताएं किस प्रकार की है।

इसतरह वो बालक को उचित दिशा और सही निर्देशन दे सकता है।

(2) बालक को सही कार्यों के प्रति प्रोत्साहित करके उसका पथ प्रदर्शन कर सकता है।

(3) शिक्षकों को बालकों को नैतिक मूल्यों का पालन करने तथा संतुलित व्यक्तित्व विकसित करने की प्रेरणा देनी चाहिए।

(4) अध्यापकों को विभिन्न समुदायों के सदस्यों के साथ अच्छे सौहार्दपूर्ण संबंध बनाकर उनके सामने उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करना चाहिए।

(5) अध्यापक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों के लिए आदर्श व्यक्तित्व होता है अतः अध्यापकों को ईमानदारी न्यायप्रियता तथा सत्यता जैसे गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए।